Rabindranath World School,

DLF Phase III, Gurgaon. 122002

Subject:- HINDI

Class:- X

HANDOUTS

Date:
Page No.

स्पर्श

स्पर्श –

'साखी'

कबीर

पाठ का सारांश –

कबीर की साखियों में एक संदेश है। वे कहते है कि ऐसी वाणी बोलनी चाहिए, जो स्वयं को भी अच्छी लगे और सुनने वाले को भी। परमात्मा हृदय में विद्‌यमान है। उसको बाहर खोजने की आवश्यकता नही है। उनको बाहर खोजने वाले लोग उस कस्तुरी मृग के समान है जो अपनी नाभि में विद्यमान सुगंध को वन में घूम-घूम कर खोजता है। वह परमात्मा अपने अंदर होते हुए भी तब तक नही मिलता तब तक हम अपने अहंकार को समाप्त नही कर देते। जैसे ही हम अंहकार का त्याग करते है हमे प्रभु के दर्शन हो जाते है। प्रभु बाहरी दिखावे से नही मिलते बाहरी दिखावे को कबीर दास जी ने ढोंग बताया है जैसे माला जपना, तिलक लगाना ये सब बाहरी आडंबर है। प्रभु सच्चे हृदय वाले मनुष्यों को प्राप्त होते है। संसार खाने-पीने और सोने को ही सुख समझता है। संसार की इस हालत को देखकर कबीर दास जी रोते है। राम के विरह में कबीर दास जी दुखी है। वह उनको सॉंप की तरह डस रहा है कबीर दास जी कहते है कि निंदा को कभी भी बुरा नही मानना चाहिए क्योंकि इसके द्वारा हमें अपनी कमियों का पता चलता है। जिसको सुधारकर हम निर्मल बन जाते है। मनुष्य को अपनी पढ़ाई - लिखाई पर गर्व नही करना चाहिए क्योंकि बडे-बड़े ग्रंथो को पढ़ने के बाद भी कोई पंडित नही बनता जिसने प्रेम का पाठ पढ़ लिया वही पंडित है कबीर दास जी कहते है कि हमने जलती हुई लकड़ी (मशाल) लेकर अपना सांसारिक जीवन समाप्त कर लिया है जो ऐसा करना चाहते है वे हमारे साथ आ सकते है।

Date:
Page No. 2

प्र० निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि।
ऐसैं घटि-घटि रॉम है, दुनियाँ देखै नाँहि ॥

1 मृग की कस्तूरी कहाँ रहती है ?
2 मृग उस सुगंध (कस्तूरी) को कहाँ ढूँढ़ता है ?
3 घट-घट में कौन है ?
4 दुनियाँ को क्या दिखाई नहीं देता ?
5- कवि और कविता का नाम लिखिए ।

प्र० निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि ॥

प्र० निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए-

बाँणी, आपा, खोई, तन, सीतल, औरन
कुंडलि, मृग, मैं, हरि, अरू, भुवंगम
जीवै, बौरा, निंदक, नेड़ा, आँगणि, बँधाइ
जग, मुवा, भया, आखिर, जाल्या, मुराड़ा

प्र० निम्नलिखित पदों का भाव स्पष्ट कीजिए -

निंदक नेड़ा राखिए, आँगणि कुटी बँधाइ।
बिन पानी

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुवा पंडित भया न कोइ।
ऐकै आखिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ ॥

RABINDRANATH WORLD SCHOOL
W-10/3120,
DLF City
Phase-III,
GURGAON

पाठ संबंधी प्रश्न -

1 मनुष्य को क्या खोकर कैसी वाणी बोलनी चाहिए ?
2 ऐसी मधुर वाणी बोलने से क्या होता है ?
3 हर हृदय में भगवान है लेकिन मानव उसको कहाँ ढूंढता है ?
4 जब "मैं" था तब हरि क्यों नहीं है ?
5 अंधेरा कब मिट जाता है ?
6 संसार के लोग किस चीज़ में खुश रहते हैं ?
7 संसार को देखकर कबीर क्या करता है ?
8 ईश्वर के विरह रूपी नाग के विष को उतारने का कोई उपाय क्यों नहीं है ?
9 विरह विष के प्रभाव से ईश्वर वियोगी को क्या होता है ?
10 निंदक को कहाँ रखना चाहिए
11 निंदक को समीप रखने से क्या फ़ायदा है ?
12 संसार किताबें पढ़ पढ़कर क्या नहीं बन सका ?
13 मनुष्य पंडित कैसे बनता है ?
14 अपना घर जलाने से क्या तात्पर्य है ?
15 अपना घर जलाने (अहंकार को नष्ट करना) के साथ-साथ और किसका घर जलाना चाहता है ?
16 लेखक (कवि) क्या घर- गृहस्थी को छोड़ने के लिए कह रहा है ?
17 ईश्वर कहाँ रहता है और उसको खोजने में मनुष्य की स्थिति किस प्रकार की हो जाती है ?
18 कबीर दास की भाषागत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए ?

Date:
Page No. 4

1. साखी में कौन-सा छंद प्रयुक्त हुआ है एवं आपा का शाब्दिक अर्थ क्या होगा?
2. 'तन सीतल' व मन का आपा खोना से क्या अभिप्राय है?
3. मधुर वाणी बोलने का क्या लाभ है?
4. कस्तूरी कहाँ बसती है तथा हिरण कस्तूरी को कहाँ ढूँढता है?
5. संसार किस तथ्य से अंजान है।
6. 'कुंडले व ढिंग घाटि-घाटि राँम है' का क्या अर्थ है?
7.

RABINDRANATH WORLD SCHOOL
W-10/3120, DLF City Phase-III,
GURGAON

मीरा के पद

मीरा (1503- 1546)

पाठ का सारांश

मीरा बाई की रचनाओं में कृष्ण भक्ति कूट कूट कर भरी हुई है। उनके आराध्य भगवान श्री कृष्ण थे। मीरा उन्हें निर्गुण और सगुण दोनो रूपो में भजती (भक्ति) थी वे गिरधर गोपाल के अनन्य और एकनिष्ठ प्रेम से अभिभूत थी।

प्रस्तुत पाठ में ~~प्रस्तुत~~ संकलित दोनो पदों मे मीरा अपने आराध्य भगवान श्री कृष्ण को सम्बोधित करती हैं। वह अपने प्रभु से कहती है कि हे प्रभु, आप अपने भक्त की विपत्तियों को दूर कीजिए। जिस प्रकार आपने द्रौपदी की लाज रखी, हाथी की विपत्ति दूर की उसी प्रकार आप हमारी भी विपत्ति दूर कीजिए। मीरा अपने प्रभु से प्रार्थना करती है कि वे उन्हें अपना नौकर बना ले ताकि मैं प्रतिदिन आपके दर्शन प्राप्त कर सकूँ। मीरा जी ने प्रभु के सौंदर्य का वर्णन भी किया है।

इस पाठ में हमें भक्ति के विभिन्न रूप के दर्शन होते हैं। श्री कृष्ण के अनन्य और एकनिष्ठ प्रेम से अभिभूत मीरा के इन पदों में अपने आराध्य से लाड प्यार और मनुहार की गहरी अभिव्यक्ति मुखरित हो उठी है।

मीरा का हर पल, हर क्षण, हर भाव, हर कण, श्री कृष्ण से जुड़ा हुआ है। मीराबाई पूर्णतया कृष्णमयी होकर श्री कृष्ण तथा वृंदावन की लीलाओं का गान करती थी।

RABINDRANATH WORLD SCHOOL
W-10/3120, DLF City Phase-III,
GURGAON

Date:
Page No. 6

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

हरि आप हरो जन री भीर।
द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रूप नरहरि, धर्यो आप सरीर।
बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुञ्जर पीर।
दासी मीरॉं लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।।

द्रोपदी कौन थी?
1
2 मीरा 'हरि' के रूप में किसे संबोधित कर रही है?
3 मीरा स्वयं की किस पीड़ा से मुक्ति पाना चाहती है?
4 उपर्युक्त काव्यांश किस भाषा में रचित है?
5- बूढ़तो, कुञ्जर का अर्थ लिखिए?

प्रश्न निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ तीनूं बातॉं सरसी।

प्र० निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए-

भीर, जन, हरो, बढ़ायो, चीर, बूढ़त, कुंजर, पीर, म्हाने, चाकर, राखो, नित पास्यूँ, गास्यों, पीताम्बर, धेनू, हीरा

RABINDRANATH WORLD SCHOOL W-10/3120, DLF City Phase-III, GURGAON

Date:
Page No. 7

RABINDRANATH WORLD SCHOOL W-10/3120, DLF City Phase-III, GURGAON

पाठ से संबंधित प्रश्न :-

I मीराबाई भगवान से किसकी विपत्ति दूर करने के लिए कहती है?
II द्रौपदी की लाज भगवान ने कैसे बचाई ?
III भगत के कारण भगवान क्या करते हैं?
IV हाथी की विपत्ति भगवान ने कैसे दूर की ?
V मीरा भगवान श्री कृष्ण से क्या चाहती है?
VI मीरा अपने आराध्य देव से अपने को नौकर रखने के लिए क्यों कहती है?
VII वृंदावन की कुंज गलियों में गोविंद क्या करते हैं?
VIII मीरा ने अपने आराध्य देव के रूप का वर्णन कैसे किया है?
IX मीरा अपने आराध्य देव के लिए महल क्यों बनाना चाहती है?
X मीरा अपने प्रभु का दर्शन कहाँ करना चाहती है?
XI 'सुमरण पास्यूं खरची' का क्या अर्थ है?
XII 'तीनूं बाता सरसी' क्या आशय है?
XIII मोरमुकुट, मोहन मुरली में कौन सा अलंकार है ?
XIV प्रस्तुत पदों में भगवान कृष्ण को किन-किन नामों से पुकारा गया है?
XV पद के अनुसार श्री कृष्ण ने किस फूलों की माला को धारण किया है?
XVI मीरा का हृदय किस कारण अधीर है?
XVII धेनू का शाब्दिक अर्थ क्या है?

मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।
मीरा श्री कृष्ण को पाने के लिए क्या-क्या कार्य करने को तैयार है?

RABINDRANATH WORLD SCHOOL W-40/3120, DLF City Phase-III, GURGAON

स्पर्श (काव्य-खंड) दोहे (बिहारी (1595 - 1663))

पाठ का सारांश !

कवि बिहारी रीतिकाल के सुप्रसिद्ध कवि थे। उन्होंने केवल एक ग्रंथ की रचना की थी - 'बिहारी सतसई'। इस ग्रंथ में लगभग 700 दोहे हैं। इन दोहों में कवि ने राधा कृष्ण के अलौकिक प्रेम, नायक-नायिका के सौंदर्य, उनकी आँखों की भाषा, हाव-भाव जैसी चेष्टाओं को समेटने का प्रयास किया है। इन दोहों में कवि ने सभी प्रकार की ऋतुओं का वर्णन करके काव्य जगत को एक चमत्कारिक रूप प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त कवि बिहारी ने लोक व्यवहार से संबंधित बातें, नीतिपरकता, ईश्वर की सच्ची भक्ति बाहरी आडंबरों का विरोध - इन सभी भावों को कम से कम शब्दों द्वारा व्यक्त किया है। दोहे जैसे छोटे छंद में बड़े-से-बड़े प्रसंग को समेटकर कवि बिहारी ने मानो 'गागर में सागर' भर दिया है

बिहारी मुख्यत: अपने श्रृंगार परक दोहों के लिए जाने जाते हैं, उन्होंने श्री कृष्ण के सौंदर्य का वर्णन, ऋतु वर्णन, नायक-नायिका के प्रेमपूर्ण वार्तालाप से उपजे रस की चर्चा अपने दोहों में की है। सभी के सामने नायक-नायिका का आँखों की भाषा के माध्यम से वार्तालाप का सौंदर्य दोहों में देखते ही बनता है।

वियोगिनी नायिका का वर्णन करते हुए बिहारी कवि हृदय से हृदय की बात बिना लिखे ही नायिका द्वारा नायक तक पहुँचाने का कार्य अपने दोहों के माध्यम से करते हैं। कवि ने भक्ति आडंबर का खंडन करते हुए कहा है कि आडंबर करने से हमारे कार्य पूरे नहीं होते सच्चे हृदय से ही हम भगवान की भक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

RABINDRANATH WORLD SCHOOL
W-10/3129, DLF City Phase-III,
GURGAON

प्र० 1 निम्नलिखित काव्यांशो को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

'बतरस' लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करैं भौंहनु हँसै, दैन कहैं नटि जाइ॥

(क) 'बतरस' से क्या अभिप्राय है?
(ख) दोहे में सौगंध कौन खा रहा है?
(ग) नायिका की क्या प्रतिक्रिया होती है?
(घ) प्रस्तुत दोहे की रचना किसने की है?

प्र० 2 कागद पर लिखत न बनत, कहत सँदेसु लजात।
कहिहै सबु तेरौ हियौ, मेरे हिय की बात॥

(क) प्रस्तुत दोहे में कौन-क्या लिखना चाहता है?
(ख) नायिका अपने भाव क्यों नही प्रकट कर पा रही है?
(ग) नायिका क्या सोचती है?
(घ) लजात तथा हिय का अर्थ लिखिए?

प्र० 3. जपमाला, छापैं तिलक सरै न एकौ कामु।
मन-काँचै नाचै बृथा, साँचै राँचै रामु॥

(क) उपर्युक्त दोहे को पढ़कर संदर्भ सहित भावार्थ लिखिए?

(ख) कवि ने किन-किन बातों को व्यर्थ बताया है?
(ग) राम किस पर रीझते है?
(घ) साँचे-राँचै में अलंकार बताइए।

निबंधात्मक प्रश्न

(क) बिहारी कवि की काव्यगत विशेषताएं लिखिए।

2 बिहारी जी ने 'गागर में सागर' भर दिया है पठित दोहों के आधार पर स्पष्ट कीजिए.

3 सच्चे मन में राम बसते हैं, दोहे के संदर्भानुसार स्पष्ट कीजिए।

4 ग्रीष्म ऋतु के जेठ मास की दुपहरी में जंगल को तपोवन की संज्ञा क्यों दी गई है?

5 कवि बिहारी के प्रकृति से संबंधित कोई पाँच दोहे छाँटकर उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

6 निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए -

सोहत
पटु
आतपु
दीरघ दाघ
बतरस
लुकाई
सौंह
रीझत
खिझत
भौन
सघन
कागद
सुबस
मन-काँचै

RABINDRANATH WORLD SCHOOL
W-10/3120, DLF City Phase-III
GURGAON

पाठ से संबंधित प्रश्न

I श्री कृष्ण के साँवले शरीर पर पीला वस्त्र कैसा लग रहा है?

II किन प्राणियों में आपस में स्वाभाविक बैर है?

III ये प्राणी आपस में बैर कब भूल जाते हैं?

IV कवि ने ग्रीष्म ऋतु की तुलना किससे की है?

V नायिका अपने प्रियतम की मुरली क्यों छिपा लेती है?

VI नायिका के भौंहों के हँसने का क्या भाव है?

VII नायिका नायक से आँखों के इशारे से बात कहाँ पर कर रही है?

VIII अत्यंत गहन वन में कौन बैठी है?

IX छाया क्या चाहती है?

X नायिका अपना संदेश नायक तक क्यों नहीं भेज पा रही है?

XI नायिका ने नायक से अपने हृदय की बात कैसे कही?

XII नायक, नायिका की बात को कैसे समझेगा?

XIII कवि श्री कृष्ण क्या चाहते हैं?

XIV सच्चे मन में राम बसते हैं – दोहे के संदर्भानुसार स्पष्ट कीजिए।

XV गोपियाँ श्री कृष्ण की बाँसुरी क्यों छिपा लेती हैं?

XVI श्री कृष्ण के सौंदर्य की कवि ने क्या कल्पना की है?

XVII

RABINDRANATH WORLD SCHOOL
W-40/3120, DLF City Phase-III,
GURGAON

Date:
Page No. 13

स्पर्श
(काव्य खंड)

मनुष्यता

मैथिली शरण गुप्त
(1886-1964)

पाठ का सारांश-

प्रस्तुत कविता 'मनुष्यता' के रचयिता राम भक्त कवि श्री मैथिली शरण गुप्त हैं। इस कविता में कवि ने मानव को यह अहसास कराया है कि वह सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। उसी में इतनी क्षमता व विवेक है कि वह अपने साथ-साथ दूसरों का भी कल्याण कर सके।

प्रस्तुत पाठ में कवि अपनों के लिए जीने-मरने वालों को मनुष्य तो मानता है लेकिन यह मानने को तैयार नहीं है कि ऐसे मनुष्यों में मनुष्यता के पूरे-पूरे लक्षण भी हैं। वह तो उन मनुष्यों को ही महान मानेगा जिनमें अपने और अपनों के हित चिंतन से कहीं पहले और सर्वोपरि दूसरों का हित चिंतन हो। अपने लिए तो सभी जीते हैं लेकिन उन्हीं का जीवन सार्थक है, जो दूसरों के लिए भी जीता है। केवल अपने लिए जीना तो पशु-प्रवृत्ति है। मनुष्यता की भावना सर्वोपरि है। उसमें वे गुण हो जिसके कारण कोई मनुष्य मर जाने के बाद भी युगों-युगों तक संसार में अमर हो जाता है। ऐसे ही लोगों की मृत्यु को सुमृत्यु कहा जाता है। मनुष्यता किसी से भी भेद भाव करना नहीं सिखाती। व्यक्ति को अपने सद्गुणों पर अहंकार नहीं करना चाहिए। हमेशा यह याद रखना चाहिए कि मानव शरीर मरणशील है और आत्मा अमर है। मृत्यु से घबराने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि संसार में जन्म लेने वाला एक दिन अवश्य ही मृत्यु को प्राप्त होगा। इसलिए अपने-आपको संसार में अमर रखने के लिए हमें अच्छे कार्य करने चाहिए। अच्छे कार्यों के द्वारा ही मनुष्य संसार में युगों-युगों तक याद रखा जाएगा। कवि ने विभिन्न उदाहरणों द्वारा इस बात को समझाया है।

Date:
Page No. 14

प्र० १ निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।
अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।।

(क) कवि ने किस चीज़ को तुच्छ माना है।
(ख) यहाँ पर भाग्यहीन कौन है?
(ग) अतीव भाग्यहीन का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
(घ) मनुष्य को गर्व कब नहीं करना चाहिए।
(ङ) कवि तथा कविता का नाम लिखिए।

RABINDRANATH WORLD SCHOOL W-10/3120, DLF City Phase-III, GURGAON

प्र० २ चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।।

(क) कवि किस प्रकार चलने को कहता है?
(ख) कवि क्या चीज न घटने और क्या न बढ़ने देना चाहता है?
ग 'तारता हुआ तरे' से क्या अभिप्राय है?
(घ) विपत्ति-विघ्न में कौन सा अलंकार है।
(ङ) कविता की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए?

Date:
Page No. 15

प्र० मैथिली शरण गुप्त की भाषा-शैली की विशेषताएँ लिखिए।

प्र. परोपकार से संबंधित दो कविता या दोहे लिखिए।

प्र० 'मनुष्य मात्र बंधु है'- से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

प्र० निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए-

मर्त्य, सुमृत्यु, पशुप्रवृत्ति, उदार, सरस्वती, कृतार्थ, कीर्ति, सृष्टि, क्षुधार्त, करस्थ, आस्थजाल, चर्म, अनित्य, लोकवर्ग, वशीकृता, मदांध, वित्त, समक्ष, अमर्त्य, प्रमाणभूत, व्यथा, अभीष्ट, अतर्क

पाठ से संबंधित प्रश्न

1 मृत्यु से क्यों नहीं डरना चाहिए?
2 कौन-सी मृत्यु अच्छी है?
3 वृथा मरना किस प्रकार है?
4. पशु प्रवृत्ति क्या है?
5. जो विश्व में अपनापन भर देता है, सरस्वती उसके लिए क्या करती है?
6 ऐसे व्यक्ति को पृथ्वी किस भाव से मानती है
7 महर्षि दधीचि ने परार्थ क्या दिया?
8 भूख से व्याकुल रतिदेव ने क्या दिया?
9 राजा उशीनर ने क्या दिया?
10 सबसे बड़ी पूँजी मानव के लिए क्या है?
11 भगवान बुद्ध का विरोधवाद किसमें बह गया?
12 संसार में कौन व्यक्ति उदार है?
13 हमें भूलकर भी किसके लिए अभिमान नहीं करना चाहिए?

RABINDRANATH WORLD SCHOOL W-10/3120, DLF City Phase-III, GURGAON

Date:
Page No. 17

स्पर्श (काव्य खंड)

पर्वत प्रदेश मे पावस
(सुमित्रानंदन पंत) 1900 – 1977

सारांश

सुमित्रानंदन पंत का पहाडो से संबंध जन्म जात था। फिर भला उनकी कविता पहाड़ों के सौंदर्य से वंचित कैसे रह सकती थी।

प्रस्तुत पाठ 'पर्वत प्रदेश में पावस' में पर्वतीय क्षेत्रों में वर्षा ऋतु का अनुपम वर्णन किया गया है। वर्षा ऋतु में हर क्षण पहाड़ों का वेश बदलता दिखाई देता है। पहाड़ पर हर क्षण नवीन रूप धारण करता दिखाई देता है। वह अपने सहस्त्रों पुष्प रूपी आँखों से देख रहा है। उसका विशाल आकार जलमग्न है। पहाड़ों में स्थान-स्थान पर छोटे-बडे तालाब होते हैं। कवि कहता है कि जब उन पर सूर्य की किरणे पड़ती हैं तो वे दर्पण के समान चमकते हुए दिखाई देते हैं। जगह-जगह पर जल-प्रपात पर्वत पर मोती की लड़ियों के समान दिखाई देते हैं। पेड़ो व वनस्पतियों से भरा पर्वत बहुत सुंदर प्रतीत हो रहा है। वर्षा ऋतु में जब बादल अपने विशाल आकार के साथ नभ में छाने लगते हैं तो ऐसा लगता है मानो पर्वत आकाश में उड रहे हो। जब वर्षा होने लगती है तब ऐसा लगता है मानो आकाश जमीन पर टूटकर गिर पड़ा हो। उससे ज़मीन के पेड़-पौधे भी धँस गए हैं। बादल के उड़ने पर ऐसा प्रतीत होता है। मानो तालाब के जलने के कारण उसमें धुआँ उठ रहा हो इस प्रकार बादल रूपी यान में बैठकर इंद्र जादू का खेल खेल रहा हो।

निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश
पल-पल परिवर्तित प्रकृति-वेश।
मेखलाकार पर्वत अपार
अपने सहस्र दृग-सुमन फाड़
अवलोक रहा है बार-बार
नीचे जल में निज महाकार,
-जिसके चरणों में पला ताल
दर्पण सा फैला विशाल

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

उड़ गया, अचानक लो, भूधर
फड़का अपार पारद के पर!
रव-शेष रह गए हैं निर्झर!
है टूट पड़ा भू पर अंबर!
धँस गए धरा में सभय शाल!
उठ रहा धुआँ, जल गया ताल!
-यों जलद यान में विचर-विचर
था इंद्र खेलता इंद्रजाल

(क) कवि को बादल छा जाने पर कैसा दिखता है ?
(ख) 'पारद के पर' में कौन सा अलंकार है ?
ग उपर्युक्त पंक्तियों के अनुसार साल के पेड़ कहाँ चले गए हैं ?
(घ) 'इंद्र खेलता इंद्रजाल' से क्या आशय है ?
ग 'भूधर' का क्या अर्थ है ?

पाठ से संबंधित प्रश्न -

1 वर्षा ऋतु में पर्वतीय क्षेत्र कैसा लग रहा था ?
2 हजारों फूलों से पहाड़ कैसा लग रहा है ?
3 पहाड़ के नीचे क्या दिखाई दे रहा है ?
4 पहाड़ों में तालाब की शोभा कैसी दिखाई देती है ?
5 पहाड़ का गौरव गान कौन गा रहा है ?
6 पहाड़ पर झरने कैसे दिखाई दे रहे हैं ?
7 पहाड़ की छाती पर वृक्ष किस प्रकार खड़े हैं ?
8 पेड़ शांत भाव से आकाश की ओर देखते हुए कैसे प्रतीत हो रहे हैं ?
9 आकाश में विशालकाय बादल देखकर कैसा लग रहा है ?
10 तेज बारिश में पहाड़ कैसा लग रहा है ?
11 तालाब के ऊपर उड़ता हुआ बादल कैसा लग रहा है ?
12 वर्षा के देवता इंद्र उस समय कैसे लग रहे हैं ?
13 झरने कैसे प्रतीत हो रहे हैं ?
14 पावस ऋतु में प्रकृति में कौन-कौन से परिवर्तन आते हैं ? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
15 कवि सुमित्रानंदन पंत की भाषा-शैली एवं साहित्यिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

निम्न लिखित शब्दों के अर्थ लिखिए -

पावस, मेखलाकार, दृग, अवलोक, निज, महाकार, ताल, दर्पण, विशाल, गिरि, गौरव उर, तरुवर, नीरव, अनिमेष, भूधर, वारिद, रव, भू, अंबर, धान, विपर, इंद्रजाल

RABINDRANATH WORLD SCHOOL W-10/3120, DLF City Phase III

स्पर्श (काव्य खंड)

मधुर-मधुर मेरे दीपक जल!

महादेवी वर्मा (1907-1987)

पाठ का सारांश

'मधुर मधुर मेरे दीपक जल! कविता छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा रचित है। छायावादी कवियों में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनका समस्त काव्य वेदना व पीडा से पूर्ण है। इनकी कविताओं में भावों की गहराई है, जो पाठकों को अनायास ही अपनी ओर खींच लेती है।

इस कविता में कवयित्री ने आध्यात्मिक दीपक का वर्णन किया है, जो प्रभु आस्था व प्रेम का प्रतीक है। वे दीपक से निरंतर जलने का आग्रह करती है ताकि ईश्वर को पाने का मार्ग आलोकित हो जाए और प्रियतम को पाने में कोई कठिनाई न हो। इस कविता के माध्यम से कवयित्री यह संदेश भी देना चाहती हैं। कि ईश्वर की प्राप्ति निरंतर साधना से करनी पड़ती है। बाहरी आडंबरो से ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती। आस्थारूपी दीपक से सभी के हृदय में ईश्वर के प्रति प्रेम उत्पन्न करना आवश्यक है।

RABINDRANATH WORLD SCHOOL GURGAON

Date:
Page No. 22

प्र० 1 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

जलते नभ में देख असंख्यक,
स्नेहहीन नित कितने दीपक;
जलमय सागर का उर जलता,
विद्युत ले घिरता है बादल!
विहँस विहँस मेरे दीपक जल!

(क) 'स्नेहहीन दीपक' से क्या तात्पर्य है?
(ख) सागर को 'जलमय' कहने का क्या अभिप्राय है और उसका हृदय क्यों जलता है?
(ग) बादलों की क्या विशेषता बताई गई है?
(घ) कवयित्री दीपक को विहँस विहँस जलने के लिए क्यों कह रही हैं?

प्र०-2 सारे शीतल कोमल नूतन,
माँग रहे तुझसे ज्वाला-कण
विश्व-शलभ सिर धुन कहता 'मैं
हाय न जल पाया तुझ में मिल'!
सिहर सिहर मेरे दीपक जल!

(क) किससे कौन ज्वाला माँग रहे हैं?
(ख) 'विश्व-शलभ' कौन है? वह सिर धुनकर क्या कहना चाहता है?
ग 'सिहर-सिहर' में कौन सा अलंकार है?
घ कवयित्री और कविता का नाम लिखिए।

Date:
Page No. 23

प्र० कविता में जब एक शब्द बार-बार आता है और वह योजक चिह्न द्वारा जुड़ा होता है, तो वहाँ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार होता है; जैसे- पुलक-पुलक । इसी प्रकार कुछ और शब्द खोजिए जिनमें यह अलंकार हो।

प्र० इस कविता में जो भाव आए हैं, उन्हीं भावों पर आधारित कवयित्री द्वारा रचित कुछ अन्य कविताओं का अध्ययन करें; जैसे-
(क) मैं नीर भरी दुख की बदली
(ख) जो तुम आ जाते एकबार ये कविताएँ 'सांध्यगीत' में संकलित हैं।

प्र० निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए-

1 सौरभ, विपुल, मृदुल, अपरिमित, पुलक, ज्वालाकण शलभ, सिहरना, उर, विद्युत

प्र० मधुर-मधुर, पुलक-पुलक, सिहर-सिहर और विहँस-विहँस कवयित्री ने दीपक को हर बार अलग-अलग तरह से जलने को कहा है क्यों? स्पष्ट कीजिए।

पाठ से संबंधित प्रश्न-

1 कवयित्री अपने दीपक को किस प्रकार से जलने के लिए कहती है?
2 कवयित्री धूप बनकर क्या फैलाने के लिए कहती है?
3 कवयित्री अपने दीपक से मोम की तरह घुलने के लिए क्यों कहती है?
4 अपने को समर्पित करके दीपक क्या करेगा?
5- विश्व रूपी पतंगा क्या करना चाहता है?
6 स्नेह हीन दीपक से क्या तात्पर्य है?
7 सागर को 'जलमय' कहने का क्या अभिप्राय है और उसका हृदय क्यों जलता है?

Date:
Page No. 24

8 बादलों की क्या विशेषता बताई गई है?

RABINDRANATH WORLD SCHOOL GURGAON

RABINDRANATH WORLD SCHOOL GURGAON

स्पर्श (पद्य)

तोप

वीरेन डंगवाल

प्रतीक तथा धरोहर दो प्रकार की होती हैं। एक वे देखकर या जिनके बारे में जानकर हमें अपने देश और समाज की प्राचीन उपलब्धियों के विषय में पता चलता है और दूसरी वे जो हमें बताती हैं कि हमारे पूर्वजों से कब क्या चूक हुई थी, जिसके फलस्वरूप देश की कई पीढ़ियों को असहय दुख और दमन झेलना पड़ा था।

'तोप' नाम से यह कविता हमें ब्रिटिश शासन के दुष्कर्मों का स्मरण दिलाती है। भारत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी व्यापार करने आई थी, तब भारतवासियों ने उन्हें मित्र की तरह गले लगाया। धीरे-धीरे कंपनी हमारे देश की शासक बनकर अत्याचार करने लगी।

प्रस्तुत पाठ में कंपनी बाग में रखी गई तोपों का वर्णन किया गया है। जो कभी कंपनी सरकार के लिए काम की वस्तु रही थी, वह आज एक खिलौने की तरह देखी जा सकती है। प्रस्तुत कविता में तोप की दुर्दशा का वर्णन किया है। यद्यपि तोप तो युद्ध का प्रतीक है। उसकी मौन भाषा बड़े-बड़े वीरो की धज्जी उड़ाने का बखान करती है। लेकिन आज वह बच्चों के लिए खिलौना है। छोटे बच्चे उस पर बैठकर घुड़सवारी का खेल खेलते हैं। उसके ऊपर चिड़ियाँ बैठकर चहचहाती हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि तोप चाहे कितनी बड़ी क्यों न हो एक दिन उसका मुख स्वतः बंद हो जाता है।

Date:
Page No. 26

प्रश्न- निम्न पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

1 अब तो वहर हाल
छोटे लड़कों की घुड़सवारी से अगर वह फ़ारिग हो
तो उसके ऊपर बैठकर
चिड़ियाँ ही अक्सर करती हैं गपशप।

2 वे बताती हैं कि दरअसल कितनी भी बड़ी हो तोप
एक दिन तो होना ही है उसका मुँह बंद।

3 उड़ा दिए थे मैंने
अच्छे-अच्छे सूरमाओं के धज्जे।

प्रश्न निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए-

मुहाने, सम्हाल, विरासत, सैलानी,
जबर, सूरमा, फ़ारिग, अक्सर, दरअसल

प्रश्न

RABINDRANATH WORLD SCHOOL
GURGAON

RABINDRANATH WORLD SCHOOL GURGAON

पाठ से संबंधित प्रश्न-

1 1857 ई की तोप कहाँ रखी हुई थी ?
2 इस तोप की देखभाल किस प्रकार की जाती है।
3 सुबह शाम यहाँ कौन आते है ?
4 उन्हें तोप क्या बताती है ?
5 वह अपने समय में किनकी धज्जियाँ उड़ाती थी ?
6 अब उस तोप पर छोटे लड़के क्या करते हैं ?
7 चिड़ियाँ उस तोप पर क्या करती है ?
8 गौरैया पक्षी किस प्रकार से शैतानी करती है ?
9 गौरैया पक्षी क्या संदेश देती है ?
10 कंपनी बाग में रखी तोप क्या सीख देती है ?
11 कविता में तोप को दो बार चमकाने की बात कही गई है। ये दो अवसर कौन-से होंगे ?
12 कंपनी बाग में रखी तोप क्या सीख देती है ?
13 इस कविता से आपको तोप के विषय में क्या जानकारी मिलती है ?
14 अपने जमाने में 'सैकावि' का क्या तात्पर्य है ?
15 'तोप' कविता के माध्यम से कवि ने क्या संदेश दिया है ?

Date:
Page No. 29

RABINDRANATH WORLD SCHOOL
GURGAON

स्पर्श (काव्य खंड)

कर चले हम फ़िदा
कैफ़ी आजमी (1919-2002)

पाठ का सारांश

'कर चले हम फ़िदा' गीत उर्दू कवि कैफ़ी आजमी द्वारा रचित है। यह गीत कवि ने चीन की पृष्ठभूमि पर बनी फ़िल्म 'हकीकत' के लिए लिखा था। यह युद्ध हिम (बर्फ) से आच्छादित (ढकी हुई) हिमालय की वादियों में हुआ था। जिसमें अनेक सैनिको ने वीरगति प्राप्त की थी।

अपना जीवन हर प्राणी को प्रिय होता है कोई भी इसे यूँ ही खोना या नष्ट होने देना नहीं चाहता असाध्य रोगी तक जीवन की कामना करते है। लेकिन इसके ठीक विपरीत होता है सैनिक का जीवन जो अपने लिए नही अपने देश की रक्षा और देशवासियों की आजादी की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने से नही डरता। जब उनकी आज़ादी पर खतरा दिखाई पड़ता है तब दुश्मनों के सामने वह सीना तान कर खड़ा हो जाता है। इस मुकाबले में औरों की जिंदगी और आज़ादी भले ही बची रहे, उसकी अपनी मौत की संभावना सबसे अधिक होती है।

प्रस्तुत गीत में सैनिको की भी देशवासियों से कुछ अपेक्षाएँ हैं। वे अपनी मृत्यु के पश्चात अपने देश की सुरक्षा का दायित्व देश के नागरिकों को सौंपना चाहते हैं। उन्हें विश्वास है कि देश के लिए अपने प्राण बलिदान करने वालों का काफ़िला हमेशा सजता रहेगा। भारतवासी अपने रक्त की बूंद-बूंद से देश के सम्मान की रक्षा करेंगे।

इस कविता में सैनिकों के हृदय की आवाज़ है, जिन्हें अपने देश के प्रति किए गए हर कार्य, हर बलिदान पर गर्व है।

Date:
Page No. 30

प्र० निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

कर चले हम फ़िदा, जानो-तन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो
साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई
फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया
कट गए सर हमारे तो कुछ गम नहीं
सर हिमालय का हमने न झुकने दिया
मरते-मरते रहा बाँकपन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।

1 इस गीत की पृष्ठभूमि लिखिए।
2 सैनिकों की कैसी दशा होती जा रही थी?
3 सैनिकों को किस बात का गर्व था?
4 मरते-मरते में कौन सा अलंकार है?
5 सैनिकों ने देश के लिए क्या-क्या काम किए?

प्र० निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए —

फ़िदा, वतन, नब्ज़, गम, सर, रुत, रुस्वा, खूँ, कुर्बानी, वीरान, राह, काफ़िले, जश्न, जमीं, लकीर

प्र० निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

जिंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर
जान देने की रुत रोज़ आती नहीं
हुस्न और इश्क दोनों को रुस्वा करे
वो जवानी जो खूँ में नहाती नहीं
आज धरती बनी है दुल्हन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।

Date:
Page No. 31

RABINDRANATH WORLD SCHOOL GURGAON

पाठ से संबंधित प्रश्न

1 सैनिकों ने अपने तन को न्योछावर किसके लिए किया?
2 सैनिकों ने साँस थमने तक क्या न रुकने दिया?
3 सैनिकों को किस बात का गम नहीं है?
4 सैनिकों ने किसको नहीं झुकने दिया?
5 जिंदा रहने के मौके तो बार-बार मिलते हैं, कौन से मौके बार-बार नहीं मिलते हैं?
6 कौन सी जवानी व्यर्थ है?
7 आज धरती क्या बनी हुई है?
8 किसकी राह विरान न हो?
9 सैनिक किसको सजाने के लिए कहते हैं?
10 सैनिकों के अनुसार कौन गले मिल रहे हैं?
11 सैनिक सिर पर क्या बाँधने के लिए कहते हैं?
12 जमीन में खून की रेखा खींचने का क्या तात्पर्य है?
13 इस कविता में रावण किसका प्रतीक है?
14 सीता का दामन से क्या अभिप्राय है?
15 राम-लक्ष्मण तुम्हीं हो का क्या अर्थ है?

स्पर्श (काव्य खंड)

आत्मत्राण

रवींद्रनाथ ठाकुर (1861-1941)

पाठ का सारांश-

प्रस्तुत कविता नोबेल पुरस्कार से सम्मानित रवींद्रनाथ ठाकुर द्वारा रचित है। उनकी इस कविता का बंगला से हिंदी में अनुवाद श्रद्धेय आचार्य हजारी प्रसाद ने किया है।

प्रस्तुत पाठ में कविगुरु मानते हैं कि प्रभु में सब कुछ संभव कर देने की क्षमता है, फिर भी वह बिल्कुल नहीं चाहते कि वही सब कुछ कर दें। कवि कामना करता है कि किसी भी विपत्ति में, मुसीबत में वह प्रभु के पास जाकर यही वरदान चाहता है कि मुझे मुसीबतों से लड़ने की शक्ति प्रदान करें। वह मुसीबतों को दूर करने की प्रार्थना नहीं करता, कवि कामना करता है कि प्रभु इन्हें मुसीबतों से लड़ने की शक्ति प्रदान करे। अपने मार्ग में आने वाली मुसीबतों, बाधाओं को देखकर वह घबराए ना बल्कि उनका डटकर मुकाबला करे। अपने कष्टों को दूर करने का संघर्ष वह स्वयं करे। प्रभु को कुछ न करना पड़े। तैरना चाहने वालों को स्वयं ही पानी में हाथ पैर चलाने पड़ते हैं, तभी वह कुशल तैराक बनता है। परीक्षा देने वाले को स्वयं ही परीक्षा देनी पड़ती है। स्वयं ही संघर्षों का सामना करने से व्यक्ति कुंदन की तरह निखर जाता है।

कवि कहता है कि दुखों व कष्टों से पीड़ित मेरे चित्त को आप शांत न करें अपितु उसको सहन करने की शक्ति प्रदान करें। हे प्रभु! मैं कभी आप पर संशय न करूँ।

RABINDRANATH WORLD SCHOOL
GURGAON

Date:
Page No. 34

प्र० निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

विपदाओं से मुझे बचाओ,
यह मेरी प्रार्थना नहीं
केवल इतना हो (करुणामय)
कभी न विपदा में पाऊँ भय।
दुख-ताप से व्यथित चित्त को न दो
सांत्वना नहीं सही
पर इतना होवे (करुणामय)
दुख को मैं कर सकूँ सदा जय।

(क) कवि भगवान से विपत्तियों से बचाने के लिए न कहकर क्या प्रार्थना करता है?
ख कवि दुख की घड़ी में क्या इच्छा रखता है?
ग कवि व कविता का नाम लिखिए।
घ 'व्यथित' शब्द का अर्थ लिखिए।

RABINDRANATH WORLD SCHOOL GURGAON

कोई कहीं सहायक न मिले
तो अपना बल पौरुष न हिले;
हानि उठानी पड़े जगत में लाभ अगर वंचना रही
तो भी मन में ना मानूँ क्षय।।
मेरा त्राण करो अनुदिन
तुम यह मेरी प्रार्थना नहीं
बस इतना होवे (करुणामय)
तरने की हो शक्ति अनामय।

(क) कवि सहायक न मिलने पर क्या चाहता है?
ख कवि लाभ न मिलने पर क्या कहता है

Date:
Page No. 35

(ग) 'त्राण' शब्द का अर्थ लिखिए।
(घ) कवि की क्या प्रार्थना नहीं है?

पाठ से संबंधित प्रश्न -

I कवि की प्रार्थना क्या संदेश देती है?
II किसी सहायक पर निर्भर न रहने की बात कवि क्यों कहता है?
III कवि भगवान से अपनी रक्षा न करने के लिए क्यों कहता है?
IV चारों ओर से दुखों से घिरने पर कवि क्या चाहता है?

प्र० निम्नलिखित अंशों का भाव स्पष्ट कीजिए -

दुःख-रात्रि में करे वंचना,
मेरी जिस दिन निखिल मही।
उस दिन ऐसा हो करुणामय,
तुम पर करूँ नहीं कुछ संशय ॥

RABINDRANATH WORLD SCHOOL GURGAON

प्र० 'आत्मत्राण' गीत अन्य गीतों से अलग कैसे है?
प्र० यह कविता हमें क्या संदेश देती है?

प्र० अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए आप प्रार्थना के अतिरिक्त और क्या-क्या प्रयास करते हैं? लिखिए।

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखो?

विपदा, भय, चित्त, करुणामय, दुःख ताप, व्यथित
पौरुष, त्राण, अनुदिन प्रतिदिन, अनामय, लघु
सांत्वना, नतशिर, वंचना, निखिल, संशय